



युद्धरत दो तलवारें

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

मेरे पिता तब महज़ पाँच साल के थे। हमारा परिवार एक पहाड़ी गाँव में रहता था, जो नीचे फैले मैदान पर नज़र रखता था। उन पत्थर के घरों से दुनिया दूर जान पड़ती थी, फिर भी हर घटना आखिरकार पहाड़ चढ़ ही आती थी।

उन्होंने एक ट्रेड यूनियन वाले आदमी से एक बकरी खरीदी थी। कभी यह जानवर आमदनी देता था, मगर मालिक ने उसे बेच देने का फ़ैसला कर लिया था। हर सुबह मेरी दादी उसे दुहने की कोशिश करतीं। दूध कभी काफ़ी नहीं होता था।

मेरे पिता को नाश्ता चाहिए होता था, जैसे हर बच्चे को होता है। सो, मेज़ पर एक प्याला आ जाता: बासी रोटी, थोड़ा-सा बकरी का दूध, और उसे एक दिन और चलाने के लिए मिला दिया गया पहाड़ी पानी। वह जंग थी, इससे पहले कि किसी ने उसे जंग कहा।

भोर होते ही वह घर से थोड़ी दूर एक छोटे-से चौक तक जाता और आसमान की ओर ताकता। वहीं से वह उस लड़ाई को देखता, मानो वह कोई खेल हो। हवाई जहाज़ क्षितिज को पार करते। मैदान से सायरनों की गूँज उठती। बम हवाई अड्डों और सैनिक ठिकानों पर गिरते। बड़े-बूढ़े फुसफुसाकर बातें करते, मगर बच्चे ऊपर की ओर देखते।

दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो चुका था। इसने सबको अपनी चपेट में ले लिया। फिर भी हज़ारों मील की दूरी से जुदा दो घटनाएँ आखिरकार एक रेज़र ब्लेड में आकर मिलने वाली थीं।

जर्मनों ने ब्रिटिश हमलों का जवाब लंदन और दूसरे बड़े शहरों पर बमबारी से दिया। कारखानों में उत्पादन धीमा पड़ गया। आपूर्ति दुर्लभ होती गई। यहाँ तक कि मशहूर विल्किंसन स्वीड ब्लेड भी अलमारियों से गायब होने लगे। ठीक उसी समय, ब्रिटिश फ़ौजें अफ़्रीका में लड़ रही थीं।

वहाँ उन्होंने हज़ारों कैदियों को बंदी बनाया। एक फ़ौज भूख सह सकती है। एक फ़ौज गर्मी सह सकती है। जो चीज़ वह नहीं सह सकती, वह है बीमारी। बहुत-से कैदियों पर थोपी गई पहली रस्म न कोई भाषण थी, न परेड, और न ही कोई टीका। वह थी शेव। साफ़ चेहरे का मतलब था कम परजीवी, कम संक्रमण और ज़्यादा नियंत्रण।

शुरुआती महीनों में हर कोई तलवारों की तलाश करता था। तलवारें वहाँ थीं ही नहीं। लंदन उनकी पर्याप्त आपूर्ति नहीं कर पा रहा था। तभी अमेरिका आगे आया। जहाज़ महासागरों को पार करते हुए अन्न, ईंधन, साज़ो-सामान और तमाम दूसरी चीज़ों के बीच रेज़र ब्लेड भी ढोकर लाए।

कैदी शिविरों के भीतर एक सूक्ष्म-सा बदलाव आया। लोगों ने तलवारें माँगना बंद कर दिया। वे एक जिलेट माँगने लगे। जैसे पहले विश्व युद्ध ने विल्किंसन स्वॉर्ड को मशहूर बनाने में मदद की थी, वैसे ही दूसरे विश्व युद्ध ने जिलेट को एक आम शब्द बना देने में मदद की। एक ब्रांड एक भाषा बन चुका था।

बरसों बाद, जब कैदी, सैनिक और मज़दूर अपने घर लौटे — इटली, फ्रांस, मिस्र, यूनान, या जहाँ कहीं भी किस्मत उन्हें ले गई थी — तो वे नज़दीकी दुकान में गए और उन्होंने रेज़र ब्लेड नहीं माँगा। उन्होंने कहा:

“मुझे एक जिलेट दे दो।”

वही असली लड़ाई थी, जो मायने रखती थी। और उसे दोनों तलवारें हार गईं।

फर्दिनांदो फ्रेगा